Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal, Impact Factor: 6.1

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 5; 2025; Page No. 08-10

IASE (deemed to be university)

Special Issue of International Seminar (23rd - 24th August, 2025)
On the Topic
Indian Knowledge System (IKS): Challenges & its Application in Higher Education for Sustainable Development
By
Faculty of Education, IASE (DU), Sardarshahar, Churu, Rajasthan - 331403

Digital Tools and Technology for Promoting Indian Knowledge System (IKS)

मंगल बागोरिया

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17177213

Corresponding Author: मंगल बागोरिया

भूमिका

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) सदियों से मानव जीवन के सभी पहलुओं में योगदान देती रही है। इसमें वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, वास्तु, संगीत, गणित और खगोलशास्त्र जैसे क्षेत्रों का समग्र ज्ञान शामिल है। आज के डिजिटल युग में IKS को संरक्षित करना और नई पीढ़ी तक पहुँचाना चुनौतीपूर्ण है। इस शोधपत्र में यह चर्चा की गई है कि कैसे डिजिटल टूल्स और तकनीक IKS के प्रचार, संरक्षण और अध्ययन में मदद कर सकते हैं। इसके माध्यम से शोधार्थियों, विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में सुलभ बनाया जा सकता है।

मूलशब्द: IKS, वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, वास्तु, संगीत, गणित

प्रस्तावना

भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा ने सदियों तक मानव जीवन को दिशा और मार्गदर्शन दिया है। हालांकि समय के साथ इसकी पहुंच सीमित हो गई थी। डिजिटल तकनीक ने इस स्थिति को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ई-पुस्तकालय, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, मोबाइल ऐप्स, ऑडियो-वीडियो सामग्री, सोशल मीडिया और आभासी अनुभव (VR/AR) IKS को व्यापक रूप से फैलाने और समझने के नए रास्ते खोलते हैं।

डिजिटल माध्यम न केवल ज्ञान को सुलभ बनाता है, बल्कि इसे रोचक और इंटरैक्टिव भी बनाता है। इससे छात्र और शोधार्थी पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के प्रति अधिक उत्साहित होते हैं और अध्ययन में उनकी भागीदारी बढ़ती है।

IKS का महत्व

1. **सांस्कृतिक संरक्षण**: IKS हमारे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्यों को सुरक्षित रखता है।
2. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण**: आयुर्वेद, ज्योतिष और खगोलशास्त्र में प्राचीन वैज्ञानिक सोच की झलक मिलती है।
3. **वैश्विक प्रासंगिकता**: योग और ध्यान आज पूरी दुनिया में स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन के लिए लोकप्रिय हैं।

4. **शैक्षणिक नवाचार**: IKS के माध्यम से शिक्षा में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा मिलता है।

डिजिटल टूल्स और तकनीक का योगदान

डिजिटल तकनीक IKS को फैलाने, संरक्षित करने और शिक्षार्थियों तक पहुँचाने में निम्नलिखित तरीके से मदद करती है:

1. **ई-पुस्तकालय और ऑनलाइन संग्रह**
   - वेद, उपनिषद और अन्य ग्रंथ डिजिटल रूप में संग्रहित किए जा रहे हैं।
   - शोधार्थी इन्हें कहीं से भी पढ़ सकते हैं।
2. **ऑनलाइन पाठ्यक्रम और MOOCs**
   - NPTEL और अन्य प्लेटफॉर्म IKS से जुड़े विषयों को छात्रों तक पहुँचाते हैं।
   - आयुर्वेद, योग और संगीत जैसे विषय ऑनलाइन सिखाए जाते हैं।
3. **ऑडियो-वीडियो सामग्री**
   - वीडियो, पॉडकास्ट और वेबिनार पारंपरिक ज्ञान को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करते हैं।
   - VR/AR तकनीक से इंटरैक्टिव अनुभव प्रदान किए जाते हैं।
4. **मोबाइल ऐप्स**
   - कई ऐप्स योग, आयुर्वेद और संस्कृत साहित्य सीखने के लिए उपलब्ध हैं।
   - उपयोगकर्ता कहीं भी और कभी भी अध्ययन कर सकते हैं।
5. **सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स**
   - IKS सामग्री को सोशल मीडिया पर साझा करके युवा पीढ़ी तक पहुँचाया जा सकता है।
   - समुदाय आधारित प्लेटफॉर्म ज्ञान के प्रचार और संवाद को बढ़ावा देते हैं।
6. **डेटा एनालिटिक्स और AI**
   - AI तकनीक से IKS ग्रंथों और शोध का विश्लेषण किया जा सकता है।
   - इससे नए शोध और नवाचार को बढ़ावा मिलता है।

डिजिटल तकनीक के लाभ

1. ज्ञान को अधिक लोगों तक पहुँचाना संभव होता है।
2. शोध और अध्ययन में सुविधा मिलती है।
3. पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक तकनीक के माध्यम से रोचक बनाना।
4. छात्रों और शोधार्थियों में IKS के प्रति रुचि बढ़ाना।
5. वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रचार करना।

चुनौतियाँ

1. डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट की पहुंच में असमानता।
2. प्रामाणिक और विश्वसनीय सामग्री की कमी।
3. IKS के जटिल विषयों को डिजिटल रूप में समझाना कठिन।
4. जानकारी के सरलीकरण से गलत व्याख्या का खतरा।
5. डेटा सुरक्षा और कॉपीराइट से जुड़ी समस्याएँ।

भविष्य की दिशा

1. विश्वविद्यालयों में IKS के लिए विशेष डिजिटल लाइब्रेरी का निर्माण।
2. मोबाइल और वेब-आधारित इंटरैक्टिव पाठ्यक्रम का विकास।
3. AI और मशीन लर्निंग के माध्यम से डिजिटल ग्रंथों का विश्लेषण।
4. ऑनलाइन सेमिनार और वेबिनार के जरिए IKS का प्रचार।
5. अंतरराष्ट्रीय साझेदारी और सहयोग के माध्यम से वैश्विक स्तर पर IKS का विस्तार।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) सदियों का अमूल्य ज्ञान है। डिजिटल तकनीक ने इसे संरक्षित करने, अध्ययन में सहायता करने और वैश्विक स्तर पर प्रचारित करने के नए अवसर प्रदान किए हैं। ई-पुस्तकालय, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, मोबाइल ऐप्स, ऑडियो-वीडियो संसाधन और सोशल मीडिया IKS को छात्रों, शोधार्थियों और जनता तक पहुँचाने में प्रभावी माध्यम हैं।

डिजिटल उपकरणों के उपयोग से पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया जा सकता है। इससे न केवल अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा मिलता है, बल्कि युवा पीढ़ी में IKS के प्रति जागरूकता और रुचि भी बढ़ती है। इसलिए, डिजिटल टूल्स IKS के संरक्षण, प्रचार और अध्ययन के लिए सबसे प्रभावी साधन हैं।

संदर्भ

1. Chaturvedi BK. Indian philosophy and culture. New Delhi: Bharatiya Prakashan; c2018.

2. Sharma RC. Indian knowledge systems: An introduction. Varanasi: Gangaputra Publications; c2020.
3. Upadhyay S. Education and Indian values. Jaipur: Rajasthani Granthalaya; c2019.
4. Ministry of Education, Government of India. National education policy 2020. New Delhi: Ministry of Education; c2020.
5. UNESCO. Indigenous knowledge for sustainable development. Paris: UNESCO Publishing; c2019.
6. Kumar S. Digital tools in promoting IKS. J Indian Educ. 2020;46(3):45-60.
7. Mishra R. Technology and Indian knowledge systems. Jaipur: Rawat Publications; c2019.
8. Kapoor K. Text and tradition in India. New Delhi: D.K. Printworld; c2011.
9. Vivekananda S. Complete works of Swami Vivekananda. Kolkata: Advaita Ashram; c2012.
10. Aurobindo S. The life divine. Pondicherry: Sri Aurobindo Ashram Publication; c2003.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.